डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए.पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A
Part - 1
(M.I.L)
HINDI

Date:- 08-02-2023

Ajanta
Page No.
Date

'बादल को घिरते देखा है'

प्रसंग:-

'बादल को घिरते देखा है' का प्रकाशन प्रथमतः सन् 1938 ई० में 'सरस्वती' पत्रिका में हुआ था। छायावाद के 'अवसान-काल में रचित यह कविता छायावादी गीतात्मकता को नया आयाम देती है। यहाँ प्रकृति का रूमानी नहीं, वस्तुनिष्ठ अंकन हुआ है। इस रचना में प्रकृति के मधुर-रौद्र व्यक्तित्व और जनजीवन की अनछुए पहलु की एक साथ प्रस्तुति हुई है।

व्याख्या :-

प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहते हैं कि उन्होंने हिमालय के उज्ज्वल शिखरों पर बादल को घिरते देखा है। कवि ने बादलों के मोती जैसे शीतल कणों को ओस की बूंद के रूप में मानसरोवर झील में स्थित कमल पत्रों पर गिरते देखा है। हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियों पर अनेक झीलें स्थित हैं। इन झीलों के शांत व गहरे नीले जल में मैदानी क्षेत्रों की गर्मी से व्याकुल हंस शरण लेते हैं। कवि ने इन हंसों को पानी पर तैरते हुए कमलनाल के भीतर स्थित कड़वे और मीठे तंतुओं को खोजते देखा है। इस प्रकार कवि इन झीलों में विचरण करते हुए हंसों का वर्णन करता है।

कवि कहते हैं कि वसंत ऋतु के सुप्रभात में मंद-मंद हवा बह रही है तथा प्रातःकालीन सूर्य की किरणें अपनी आभा चारों ओर फैला रही थीं, जिससे आसपास के शिखर स्वर्णिम से प्रतीत हो रहे थे। प्रातःकाल में ऐसे मोहक वातावरण में रात्रि में विरह के अभिशाप में व्याकुल चकवा-चकवी का अभिशप्त जीवन क्रंदन अब शांत हो गया है और वे मानसरोवर झील के किनारे बिछी हुई शैवाल की हरी चादर पर प्रणय-क्रीड़ा कर रहे हैं। अर्थात् वे रात्रि के वियोग के पश्चात् पुनर्मिलन से अत्यंत खुश हैं।

कवि कहते हैं कि वर्तमान में धनपति कुबेर व उसकी नगरी अलका का कोई पता नहीं है और न ही कालिदास द्वारा वर्णित व्योम प्रवाही गंगाजल ही कहीं दिखाई देता है। बहुत तलाश करने पर भी 'मेघदूत' का भी पता नहीं चलता है। क्या पता वह छायामय यहीं कहीं पर बरस तो नहीं गया है। छोड़ो, वह सब तो मात्र कवि की कल्पना थी। कवि आगे कहते हैं कि उन्होंने भीषण सर्दी में गगनचुंबी कैलाश पर्वत पर बादलों को तूफानी हवाओं से गरज-गरज टकराते हुए देखा है। इस परिवेश में घिरते हुए बादलों को कवि ने स्वयं देखा है।

कवि कहता है कि पर्वतीय प्रदेश में बहने वाले सैकड़ों झरने, अपने जल प्रवाह

से देवदार के वनों में कल-कल ध्वनि कर रहे हैं। वहीं देवदार के वृक्षों के नीचे लाल और सफेद भोजपत्रों से निर्मित कुटिया के अंदर रंग-बिरंगे फूलों से केशों को सजाकर, इंद्रमणियों के हार पहने हुए, कानों में नीलकमल और वेणि में लाल कमल लटकाकर, लाल चंदन की तिपाई पर चाँदी से बने और मणियों से जड़े हुए मदिरा पात्रों के अंगुरी शराब सामने भरकर व मुलायम-मुलायम और बेदाग छोटे कस्तूरी हिरणों की छाल पर पालथी मारकर बैठे हुए तथा मदिरा-पान के कारण हुए लाल-लाल नेत्रों में मस्त किन्नर और किन्नरियों की बाँसुरी पर अपनी कोमल और मनोहर अँगुलियों को फिरते देखा है।

विशेष :-

बादल का मानवीकरण किया गया है। अतः मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है। 'शंख, सरीखे सुघड़ गालों में' में उपमा अलंकार है। 'कवि कल्पित', 'चकवा-चकवी' में अनुप्रास अलंकार है। 'मंद-मंद' 'छोटे-छोटे' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। कवि ने हिमाचल के उन्नत घाटी, देवदारु के वन और किन्नर-किन्नरियों की दंतकथाओं को प्रस्तुत कर बादल के माध्यम से प्रकृति के अनुपम सौंदर्य को शब्दचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है।